—समर्पण—

श्रीमान् परमपूज्य पिता जी के—
करकमलों में—
सादर—

समर्पित !

परमपूज्य !

आप की ही यह कृपा है ज्ञान कुछ मैंने लहा;
उपकार कितना है किया मुझ से न जा सक्ता कहा
ज्ञान की बातें सभी में पाठकों को हों, रुचें— ये
दीजिए आशीष ऐसा धर्म तरुवर सब सिंचें !!

आज्ञाकारी-पुत्र
"सिद्धसेन"